UGC NET - HINDI
SAMPLE THEORY
PAPER - II

- छायावाद का अर्थ और परिभाषा
- छायावाद कवि एवं उनका काव्य
- हिन्दी प्रगतिवादी कविता
- प्रयोगवाद और नई कविता

VPM CLASSES
For IIT-JAM, JNU, GATE, NET, NIMCET and Other Entrance Exams
1-C-8, Sheela Chowdhary Road, Talwandi, Kota (Raj.) Tel No. 0744-2429714
Web Site www.vpmclasses.com E-mail-vpmclasses@yahoo.com

छायावाद का अर्थ और परिभाषा

छायावाद का विकास द्विवेदीयुगीन कविता के उपरान्त हिन्दी में हुआ। मोटे तौर पर छायावादी काव्य की समय सीमा 1918 ई. से 1936 ई. तक मानी जा सकती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी छायावाद का प्रारम्भ 1918 ई. से माना है, क्योंकि छायावाद के प्रमुख कवियों पन्त, प्रसाद, निराला ने अपनी रचनाएं लगभग इसी वर्ष के आसपास लिखनी प्रारम्भ की थीं।

छायावादी काव्य का जन्म द्विवेदीयुगीन काव्य की प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ, क्योंकि द्विवेदीयुगीन कविता विषयनिष्ठ, वर्णन प्रधान और स्थूल थी, जबकि छायावादी कविता व्यक्तिनिष्ठ, कल्पनाप्रधान एवं सूक्ष्म है।

1. **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल–**" छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए एक तो रहस्यवाद के अर्थ में, तथा छायावाद शब्द का दूसरा प्रयोग काव्य शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में है।''

2. **जयशंकर प्रसाद–**" जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी तब हिन्दी में उसे 'छायावाद' के नाम से अभिहित किया गया।

3. **डॉ. नगेन्द्र–**''छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।

उक्त परिभाषाओं के आलोक में छायावादी काव्य के निम्न लक्षण निरूपित किए जा सकते हैं :

1. छायावादी काव्य में रहस्यवादी प्रवृति रहती है।
2. छायावादी कविता प्रेम, सौन्दर्य एवं प्रकृति का काव्य हैं।
3. छायावाद में स्थूलता के स्थान पर सूक्ष्मता रहती है।
4. छायावाद के शैली–शिल्प एवं अभिव्यंजना पद्धित में नवीनता है।
5. छायावाद में स्वानुभूति की प्रधानता है।

उक्त लक्षणों के आलोक में छायावाद की एक सर्वमान्य परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है :

''प्रेम प्रकृति और मानव सौन्दर्य की स्वानुभूतिमयी रहस्यपरक सूक्ष्म अभिव्यंजना लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक शैली में जिस काव्य में होती है, उसे छायावाद कहा जाता है।''

छायावादी काव्य की विशेषताएं

इस काव्यधारा की प्रमुख प्रवृतियों का निरूपण निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है :

1. **आत्माभिव्यंजन–** छायावादी कवियों ने काव्य की विषय–वस्तु अपने व्यक्तिगत जीवन से ही खोजने का प्रयास किया। प्रसाद कृत 'आंसू' काव्य और पंत कृत 'उच्छवास' नामक कविता इस कथन के समर्थन में पेश की जा सकती है। पन्त जी ने अपनी 'प्रिया' को मन मन्दिर में बसाकर उसे पूजने का उल्लेख निम्न पंक्तियों में किया है :

विधुर उर के मृदु भावों से तुम्हारा कर नित नव श्रृंगार।
पूजता हूं मैं तुम्हें कुमारि, मूंद दुहरे दृग द्वारा।। –पन्त

निराला की कई कविताओं में उनके व्यक्तिगत जीवन का सत्य व्यक्त हुआ है। 'राम की शक्ति पूजा' में राम की हताशा, निराशा में कवि के अपनें जीवन की निराशा की अभिव्यक्ति हुई है। उन्हें जीवन भर लोगों के जिस विरोध को झेलना पड़ा उसकी गूंज निम्न पंक्तियों में है :

''धिक जीवन जो पाता ही आया है विरोध।
धिक साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।। –निराला

महादेवी वर्मा की कविताओं में वेदना की जो प्रधानता हैं, उस पर उनके जीवन की छाया है

2. **सौन्दर्य चित्रण–** छायावादी कवि मूलतः प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं किन्तु उनकी सौन्दर्य भावना सूक्ष्म एवं उदात्त है। सौन्दर्य चित्रण में उनकी वृत्ति बाह्य वर्णनों में उतनी नहीं रमी, जितनी आन्तरिक सौन्दर्य के उद्‌घाटन में एवं भाव दशाओं के वर्णन में रमी।

कामायनी में प्रसाद जी ने श्रद्धा के सौन्दर्य का वर्णन निम्न प्रकार किया है :

नील परिधान बीच सुकुमार, खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फुल, मेघ बन बीच गुलाबी रंग।। – प्रसाद

श्रद्धा का सौन्दर्य फूलों के पराग, सुगन्ध एवं मकरन्द से युक्त है–

कुसुम कानन अंचल में मन्द पवन प्रेरित सौरभ साकार।
रचित परमाणु पराग शरीर खड़ा हो ले मधु का आधार।। – प्रसाद

3. **श्रृंगार–निरूपण** –द्विवेदीयुगीन कविता में श्रृंगार–निरूपण बहुत कम हुआ है और जहां हुआ है वहां भी मर्यादित रूप में ही है। निराला ने 'जुही की कली' नामक कविता में प्रकृति मे प्रतीकों से प्रेम व्यापारों का निरूपण किया :

निर्दय उस नायक ने, निपट निठुराई की।
झोंकों की झाड़ियों से, सुन्दर सुकुमार देह, सारी झकझोर डाली।। – निराला

वियोग श्रृंगार के अति भव्य चित्र प्रसाद कृत 'आंसू' में उपलब्ध होते हैं।
महादेवी वर्मा के काव्य में तो विरह एवं वेदना की ही अधिकता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि श्रृंगार निरूपण छाया की प्रमुख प्रवृति रहीं है।

4. **नारी भावना** – छायावादी कवियों ने नारी के प्रति उदात्त दृष्टिकोण अपनाकर समाज में उनके सम्माननीय स्थान को प्रतिष्ठित किया। रीतिकालीन कवियों ने नारी को विलास की वस्तु और उपभोग की सामग्री मात्र माना, जबकि छायावादी कवियों ने उसे प्रेरणा का पावन उत्स मानते हुए गरिमा प्रदान की। वह दया, क्षमा, करूणा, प्रेम की देवी है और अपने इन गुणों के कारण श्रद्धा की पात्र है :

'' नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास नग पग तल में।
पीयुष स्त्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।।'' – प्रसाद

पन्त ने 'देवि, मां, सहचरि, प्राण' कहकर नारी के प्रति अपने आदर का परिचय दिया। प्रसाद जी के हृदय में नारी का बहुत ऊंचा स्थान था। निम्न पंक्तियों से उनके विचारों का जाना जा सकता है :

''तुम देवि! आह कितनी उदार, वह मातृ मूर्ति है निर्विकार।
हे सर्वमंगले! तुम महती, सबक दुःख अपने पर सहती।।'' **– पन्त**

5.रहस्य भावना : छायावादी काव्य में रहस्यवाद की प्रवृत्ति भी प्रमुख रूप से उपलब्ध होती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसी कारण से 'छायावाद' का अर्थ 'रहस्यवाद' माना है। प्रायः सभी छायावादी कवियों ने अज्ञात सत्ता के प्रति 'जिज्ञासा' के भाव व्यक्त किए है। पन्त की 'मौन निमन्त्रण' कविता में इसकी अभिव्यक्ति बहुत सुन्दर ढंग से हुई है:

'न जाने कौन अए द्युतिमान, जान मुझको अबोध अज्ञान।
सुझाते हो तुम पथ अनजान, फूंक देते छिद्रों में गान।।'' **– पन्त**

प्रसाद जी ने 'कामायनी' में स्थान–स्थान पर उस अज्ञात सत्ता के अस्तित्व का बोध कराया है। पता नही वह अज्ञात सत्ता कौन है, कैसी है, और क्या है :

''हे अनन्त रमणीय कौन तुम, यह मैं कैसे कह सकता ?
कैसे हो, क्या हो, इसका तो, भार विचार न सह सकता।।'' — **प्रसाद**

निराला की 'तुम और मैं' कविता में उस परमात्मा से अनेक प्रकार के सम्बन्ध जोड़े गए है। यदि वह हिमालय है तो मैं उससे निःसृत होने वाली गंगा, यदि वह हृदय के भाव हैं तो मैं उससे जन्म लेने वाली कविता :

तुम तुंग हिमालय श्रृंग और मैं चंचल गति सुरसरिता।
तुम विमल हृदय उच्छवास और मै कान्त कामिनी कविता।। — **निराला**

6.प्रकृति चित्रण — छायावादी कवि प्रकृति के कुशल चितेरे है। इन कवियों ने प्रकृति पर मानवीय चेतना का आरोप करते हुए उसे हंसते–रोते हुए भी दिखाया है :

'' अचिरता देख जगत की आप, शून्य भरता समीर विश्वास।
डालता पातों पर चुपचाप ओस के आंसू नीलाकाश।।'' — **पन्त**

'कामायनी' में प्रसाद जी ने 'हिमालय' का निम्न चित्र अंकित किया है :

''संध्या घन माला की सुन्दर, ओढ़े रंग–बिरंगी छींट।
गगन चुम्बिनी शैल श्रेणियां, पहने हुए तुषार किरीट।।'' — **प्रसाद**

आलम्बन रूप के अतिरिक्त उद्दीपन रूप में अलंकार के रूप में, प्रतीकात्मक रूप में तथा मानवीकरण रूप में प्रकृति निरूपण छायावादी काव्य में हुआ है।

7.दुःख और वेदना की विवृति — छायावादी काव्य में दुःख और वेदना भाव की अभिव्यक्ति हुई है। महादेवी तो वेदना की ही कवयित्री है।

''मैं नीर भरी दुःख की बदली
विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कभी अपना होना
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली।।'' — **महादेवी वर्मा**

प्रसाद के 'आंसू' काव्य में भी वेदना की ही कहानी है। उन्होंने अपनी पीड़ा को ही काव्य के रूप में व्यक्त किया है :

''जो घनीभूत पीड़ा थी मस्तक में स्मृति सी छाई।
दुर्दिन में आंसू बनकर वह आज बरसने आई।।'' — **प्रसाद**

पन्त ने 'परिवर्तन' कविता में यह स्वीकार किया है कि संसार में दुःख की अधिकता है, यहाँ शान्ति जीवन पर्यन्त प्राप्त नहीं हो सकती :

''यहां सुख सरसों शोक सुमेरू, अरे जग है जग का कंकाल।
वृथा रे यह अरण्य चीत्कार, शान्ति सुख है उस पार।।'' — **पन्त**

8.शैलीगत प्रवृत्तियां — छायावादी काव्य विषय—वस्तु एवं शिल्प—दोनों ही दृष्टियों से नवीनता लिए हुए है। लाक्षणिक भाषा का प्रयोग, प्रतीकात्मक शैली, उपचारवक्रता एवं नवीन अलंकार विधान के कारण इस काव्य में शिल्पगत नवीनता दिखाई पड़ती है। पन्त की अग्र पंक्तियों में प्रतीकात्मकता एवं लाक्षणिकता को देखा जा सकता है :

अभी तो मुकुट बंधा था माथ हुए कल ही हल्दी के हाथ
खुले भी न थे लाज के बोल खिले भी चुम्बन शून्य कपोल।।
हाय रूक गया यहीं संसार बना सिन्दूर अंगार
वातहत लतिका वह सुकुमार पड़ी है छिन्नाधार।। — **पन्त**

छायावादी काव्य में परम्परित अलंकारों के साथ—साथ विशेषण विपर्यय, मानवीकरण, ध्वन्यर्थ व्यंजना और विरोधाभास अलंकार की प्रचुरता से प्रयुक्त किए गए है। अमूर्त उपमान भी इस काव्य की विशेषता है। मुक्तक गीति शैली और चित्रोपम भाषा के साथ—साथ नवीन छन्द विधान भी इस काव्य की अपनी विशेषताएं है :

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि छायावाद हिन्दी काव्य का गौरवपूर्ण अध्याय है तथा प्रसाद, पन्त, निराला और महादेवी इस युग के ऐसे हस्ताक्षर हैं जिनके योगदान से हिन्दी साहित्य को श्री समृद्धि प्राप्त हुई है।

छायावाद के प्रमुख कवि :

छायावादी कवि चतुष्ट्य में प्रसाद, पन्त, निराला एवं महादेवी वर्मा की गणना होती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने मुकुटधर पाण्डेय को छायावाद का जनक माना है।

छायावाद कवि एवं उनका काव्य

[redacted]

उत्तर छायावादी काव्य एवं उसके प्रमुख कवि – छायावादी काव्य की अन्तिम सीमा 1936 ई. मानी गई है। कुछ अन्य विद्वान इस सीमा को 1938 ई. भी स्वीकार करते है। छायावादोत्तर काव्य के रूप में हिन्दी में दो प्रकार की कविताएं प्रमुखता से लिखी गई, जिसे छायावाद और प्रगतिवाद के बीच की कविता या उत्तर छायावादी काव्य कहा गया। इसे दो वर्गो में बाटां जा सकता है :

1. राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा
2. प्रणयमूलक वैयक्तिक काव्यधारा

1. **राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा** – राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवियों में माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामधारी सिंह दिनकर, सुभद्राकुमारी चौहान, रामनरेश त्रिपाठी प्रमुख है।
2. **प्रणयमूलक वैयक्तिक काव्यधारा** – प्रणयमूलक वैयक्तिक काव्यधारा के अन्तर्गत प्रेम और मस्ती कविताएं लिखने वाले कवि – हरिवंश राय बच्चन, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', नरेन्द्र शर्मा आदि हैं। बच्चन जी के 'मधुकाव्य' को जनता में अपार लोकप्रियता प्राप्त हुई है।

[redacted]

हिन्दी प्रगतिवादी कविता :

इस प्रकार हम कह सकते है कि साम्यवादी विचारधारा के अनुरूप लिखी गई कविता प्रगतिवादी कविता है।

साम्ययवादी विचारधारा के आधार पर समाज को दो वर्गो में बाँटा जा सकता है :

1. शोषक वर्ग, 2. शोषित वर्ग।

हिन्दी कविता में प्रगतिवाद :

हिन्दी काव्य में प्रगतिवाद का प्रारम्भ सन् 1936 ई. में हुआ। 1936 ई. से 1943 ई. की कविता प्रगतिवादी कविता है। हिन्दी साहित्य के वे कवि जिन्होंने साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित होकर काव्य रचना की , प्रगतिवादी कवि कहलाए इनमें प्रमुख हैं केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, रामविलास शर्मा, शिवमंगल सिंह 'सुमन', डॉ. रांगेय राघव और त्रिलोचन शास्त्री। इनके अतिरिक्त सुमित्रानन्दन पन्त, निराला, रामधारी सिंह 'दिनकर', नरेन्द्र शर्मा आदि की रचनाओं में भी प्रगतिवादी तत्व उपलब्ध होते है।

प्रगतिवादी काव्य की प्रवृत्तियां :

1. **शोषितों की दीनता का चित्रण –** प्रगतिवादी कविता का मूल केन्द्र शोषण की चक्की में पिसने वाला किसान, मजदूर, पीड़ित की दशा का प्रगतिवादी कवि ने सहानुभूतिपूर्ण कारूणिक चित्रण किया है।

दिनकर के शब्दों में :

श्वानों को मिलता दूध, वस्त्र, भूखे बालक अकुलाते हैं।
मां की छाती से चिपक, ठिठुर, जाड़े की रात बिताते है। **– दिनकर**

2. **शोषक वर्ग के प्रति घृणा –** प्रगतिवादी काव्य में शोषक वर्ग स्वार्थी, अन्यायी, निर्दय एवं कपटी कहा गया है। शोषक वर्ग के अन्तर्गत व्यापारियों, जमींदारों, उद्योगपतियों को लिया गया है। जब तक पूंजीवादी व्यवस्था बनी रहेगी तक शोषण का अन्त असम्भव है। प्रगतिवादी अब इस व्यवस्था को भंग कर देना चाहता है और कह उठता है :

हो यह समाज चिथड़े–चिथड़े,
शोषण पर जिसकी नींव पड़ी।

3. **धर्म और ईश्वर के प्रति अनास्था–** प्रगतिवादी कवि धर्म और ईश्वर में विश्वास नहीं करता। वह इन्हें शोषण का हथियार मानता है। इसलिए प्रगतिवादी कवि ने धार्मिक विश्वासों एवं रूढ़ियों को तोड़कर विप्लव के गीत गाए है।

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल–पुथल मच जाए।
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर से आए।। **– बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'**

रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' तो ईश्वर की धारणा पर प्रश्न चिन्ह लगा देते है :

जिसका ले ले नाम युगों से मांस लुटाते तुम रोए।
किन्तु न चेता जो निशि वासर और क्षुधातुर तुम सोए।। — **रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'**

4. **क्रान्ति की भावना** — सामाजिक समता के लिए मार्क्सवाद में क्रान्ति का समर्थन किया गया है। प्रगतिवादी कवियों ने भी प्राचीन परम्पराओं का समूल विनाश क्रान्ति के द्वारा ही सम्भव माना है, वह चाहता है कि पूंजीपतियों के गगनचुम्बी महल भूमिसात हो जाए और सबको न्याय मिल सके, प्रगतिवादी कवि ने हिंसा को उचित ठहराया है :

काटो—काटो काटो कर लो, साइत और कुसाइत क्या है।
मारो—मारो मारो हसियां, हिंसा और अहिंसा क्या है।

5. **नारी चित्रण** — प्रगतिवादी कवि ने नारी का यथार्थ का चित्रण किया है वह न तो कल्पना लोक की परी है और न सौन्दर्य एवं उदात्त वृत्तियों की पराकाष्ठा, अपितु वह इसी लोक की मानवी है, जो रात—दिन पुरूष के साथ आर्थिक और सामाजिक विषमताओं को झेलती है। निराला ने पत्थर तोड़ती हुई नारी का चित्रण किया है :

वह तोड़ती पत्थर, देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर।
गुरू हथौड़ हाथ, करती बार—बार प्रहार, सामने तरू मलिका अट्टालिका प्राकार।। — **निराला**

6. **सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण** — प्रगतिवादी कवियों की एक प्रमुख विशेषता, यथार्थ के धरातल पर उतरकर काव्य की रचना करता है। उनकी रचनाओं में कल्पना रंचमात्र भी नही है। प्रगतिवादी कवियों ने काव्य मे निम्न वर्ग का चित्रण किया है। जीवन में व्याप्त, विषाद, भूख, गरीबी, बेरोजगारी और कठिनाइयों का यथार्थ चित्रण प्रगतिवादी साहित्य में ही उपलब्ध होता है।

7. प्रगतिवादी कवि की भाषा सरल है। शैली अलंकारविहीन है और मुक्त छन्द का प्रयोग भी इन्होंने किया है। उसमें कहीं बनावट नहीं। वह आम आदमी की भाषा है। पन्त जी लिखते है :

तुम वहन कर सको जन मन में मेरे विचार।
वाणी मेरी चाहिए तुम्हे क्या अलंकार।। — **पन्त**

यद्यपि प्रगतिवादी काव्य में सामाजिक विषमता को उजागर करने का महत्वपूर्ण प्रयास किया तथापि गांधी और बुद्ध के देश में हिंसा और क्रान्ति की बात किसी के गले से नीचे नहीं उतरती इसीलिए प्रगतिवादी काव्य की आयु कम रही। फिर भी इन कवियों के योगदान को भुलाया नही जा सकता।

प्रमुख प्रगतिवादी कवि और उनका काव्य

VPM CLASSES

[redacted]

प्रयोगवाद और नई कविता :

हिन्दी काव्य में 'प्रयोगवाद' का प्रारम्भ सन् 1943 ई. में 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित 'तार–सप्तक' के प्रकाशन से माना जाता है। इस संग्रह में अब तक प्रचलित कविताओं की लीक से हटकर ऐसी कविताएं थी जो नई संवेदनाओं, नए भावबोध एवं नए शिल्प से युक्त थी। प्रयोगवादी कवि 'प्रयोग' करने में विश्वास करते है। भाषा की दृष्टि से नए प्रयोग और काव्य वस्तु की दृष्टि नए प्रयोग– इन कवियों ने किए अतः 'प्रयोगवाद' नाम सार्थक जान पड़ता है, किन्तु अज्ञेय ने 'प्रयोग' को साधन मानते हुए लिखा है – ''प्रयोग अपने आप में इष्ट नहीं है, वरन् वह साधन है।'' प्रयोगवादी कवि ने अपने व्यक्गित सुख–दुःख को, अपनी व्यक्तिगत संवेदनाओं को नए–नए माध्यमों से व्यक्त किया और उस यथार्थ को अभिव्यक्ति प्रदान की, जिसे वह भोगता है। दूसरे शब्दों में यदि कहें तो मध्यमवर्गीय समाज का ह्रासोन्मुखी जीवन ही प्रयोगवादी काव्य में चित्रित किया गया है। प्रयोगवादी कवि ने भावुकता के स्थान पर बौद्धिकता को काव्य में स्थान दिया और जीवन के निराशा, कुष्ठा, अनास्था, जड़ता एवं संघर्ष को अभिव्यक्ति प्रदान की। दमित कामवासना के चित्र भी इस काव्य में उपलब्ध होते है।

'प्रयोगवाद' का विकास ही कालान्तर में 'नई कविता' के रूप में हुआ। डॉ. शिवकुमार शर्मा के अनुसार– ''ये दोनों एक ही धारा के विकास की दो अवस्थाएं है। सन ˎ 1943 से 1953 ई. तक कविता में जो नवीन प्रयोग हुए, नई कविता उन्हीं का परिणाम है। प्रयोगवाद उस काव्यधारा की आरम्भिक अवस्था है और नई कविता उसकी विकसित अवस्था।" वस्तुतः 'प्रयोगवाद' और 'नई कविता' में कोई सीमा रेखा नहीं खींची जा सकती।

हिन्दी की नई कविता का कथ्य परम्परा से भिन्न है। नवीन विषयों की नवीन शैली में अभिव्यक्ति होने के कारण 'नवीनता' को इसकी प्रमुख विशेषता माना जा सकता है। इसके अतिरिक्त बौद्धिकता, क्षणिकता और मुक्त यथार्थवाद को भी नई कविता की विशेषताओं में समाविष्ट किया जाता है।

प्रमुख कवि और उनकी कृतियां

'तार सप्तक' का प्रकाशन 'अज्ञेय' के सम्पादकत्व में सन् 1943 में हुआ। इस संग्रह से प्रयोगवादी काव्य का प्रारम्भ माना जाता है। इसमें जिन सात कवियों की रचनाएं संकलित थी, उनके नाम हैं – नेमिचन्द्र

जैन, गजानन माधव मुक्तिबोध, भारत भूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, गिरिजा कुमार माथुर, रामविलास शर्मा तथा सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'।

दूसरा सप्तक सन् 1951 में 'अज्ञेय' के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुआ। इस सप्तक में जिन अन्य सात कवियों की रचनाएं संकलित हैं उनके नाम है – भवानीप्रसाद मिश्र, शकुन्तला माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादुरसिंह, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय तथा धर्मवीर भारती।

अज्ञेय के सम्पादकत्व में ही सन् 1959 ई में तीसरा सप्तक प्रकाशित हुआ। तीसरे सप्तक में जिन सात कवियों की रचनाएं संकलित की गई उनके नाम है : 1. प्रयाग नारायण त्रिपाठी, 2. कुंवर नारायण, 3. कीर्ति चौधरी, 4. केदारनाथ सिंह, 5. मदन वात्स्यायन, 6. विजयदेव नारायण साही, 7. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना।

नई कविता के कुछ प्रमुख हस्ताक्षर है – कुंवर नारायण, दुष्यन्त कुमार, अजित कुमार, प्रभाकर माचवे, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, कीर्ति चौधरी, लक्ष्मीकान्त वर्मा, विजयदेव नारायण साही, बालकृष्णराव आदि। नई कविता के प्रचार–प्रसार का श्रेय कुछ पत्रिकाओं को भी दिया जा सकता है, जिनमें प्रमुख है – 'प्रतीक' जो अज्ञेय के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुई तथा डॉ. जगदीश गुप्त के सम्पादन में सन् 1954 से प्रारम्भ 'नई कविता' नामक पत्रिका। निकष, पाटल, कल्पना, दृष्टिकोण आदि वे पत्रिकाएं है जिन्होंने नई कविता को बढ़ावा दिया है।

प्रयोगवादी एवं नई कविता की प्रमुख कृतियों में तार सप्तक, दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक के अतिरिक्त 'हरी घासपर क्षण भर' इन्द्रधनुष रौंदे हुए ये, इत्यलम (अज्ञेय), चांद का मुंह टेढ़ा है (मुक्तिबोध), ठण्डा लोहा (धर्मवीर भारती), मन्जीर, नाश और निर्माण, धूप के धान, शिला पंख चमकीले (गिरिजा कुमार माथुर), स्वप्न भंग, अनुक्षण (प्रभाकर माचवे), चक्रव्यूह (कुंवर नारायण), ओ अप्रस्तुत मन (भारत भूषण अग्रवाल), सूर्य का स्वागत (दुष्यन्त), वन पांखी (नरेश मेहता) आदि के नाम लिए जा सकते है।

नई कविता की प्रमुख प्रवृत्तियां : विषय–वस्तु की दृष्टि से जहाँ इसमें नवीनता, मुक्त यथार्थवाद, बौद्धिकता, क्षणवादी जीवन दर्शन एवं लघु मानव की प्रतिष्ठा की गई है, वहीं शिल्प की दृष्टि से इनमें नवीन उपमान, प्रतीकात्मकता, बिम्बात्मकता एवं भाषा के नए प्रयोग का रूझान दिखाई पड़ता है। संक्षेप में इस काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों का विश्लेषण अग्र शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है :

1. **नवीनता** – भाव, विषय–वस्तु, शिल्प सभी दृष्टियों से वह 'परम्परा से विच्छेद' की कविता है। अज्ञेय ने सम्भवतः इसी कारण इन कवियों को 'नई राहों के अन्वेषी' का नाम दिया है। नए कवि नवीन मूल्यों की स्थापना करने को उत्सुक हैं और अतीत को विस्मृत करने चाहते है :

   आओ हम उस अतीत को भूलें और आज की अपनी रग–रग के अन्तर को छूलें।।

   – मुद्राराक्षस

   इस कविता में पहली बार कंकरीट के पोर्च, चाय की प्याली, सायरन, रेडियम की घड़ी, चूड़ी का टुकड़ा, बाथरूम, क्रोशिए, गरम पकौड़ी .... मूत्र सिंचित मृत्तिका के घेरे में खड़ा गध जैसे विषयों का चित्रण हुआ।

   मूत्र सिंचित मृत्तिका के वृत्त में
   तीन टांगों पर खड़ा नत ग्रीव
   धैर्य धन गदहा। **– अज्ञेय**

2. **बौद्धिकता** – परम्परागत कविता में जहाँ भावना की प्रधानता है, वहीं नई कविता में बौद्धिकता की। आज का कवि भावनाओं की कैद से छूटकर बुद्धि के दुर्ग में बैठकर शब्दों का ताना–बाना बुनने में विश्वास करता है। नया कवि पाठक के हृदय को झंकृत करने के स्थान पर उसकी बुद्धि को झकझोरना अधिक पसन्द करता है। इस बौद्धिकता की प्रधानाता के कारण ही नई कविताओं में रागात्मकता का ह्रास हुआ है और विचारात्मकता की वृद्धि हुई है। अतिशय बौद्धिकता का ही यह दुष्परिणाम है कि नई कविता रसहीन हो गई है और उसमें साधारणीकरण की क्षमता नहीं रही है। डॉ. धर्मवीर भारती नई कविता में उपलब्ध इस बौद्धिकता का समर्थन करते हुए कहते है – ''प्रयोगवादी कविता में भावना है, किन्तु हर भावना के सामने एक प्रश्नचिन्ह लगा हुआ है। इसी प्रश्नचिन्ह को आप बौद्धिकता कह सकते है।''

   मेरी विशाल बुद्धि सूर्य चन्द्र तारों के तापवेग नाप रही
   मेरी अतर्क्य शक्ति, जल–थल समीर व्योम विद्युत को चांप रही।। **– डॉ. देवराज**

3. **अतिशय वैयक्तिकता** – भारतेन्दु युग एवं छायावादी युग के कवियों में भी वैयक्तिकता की प्रवृत्ति रही है, किन्तु प्रयोगवादी युग के कवियों ने अतिशय वैयक्तिकता की झोंक में कहीं–कहीं तो कविता को आत्मविज्ञापन सा बना दिया है। उदाहरण के लिए 'भारत–भूषण' की निम्न पंक्तियां दृष्टव्य है :

साधारण नगर के एक साधारण घर में मेरा जन्म हुआ।
बचपन बीता अति साधारण
साधारण रहन–सहन साधारण खान–पान।। — **भारत भूषण**

कवियों ने अपने विक्षोभ, निराशा, कुण्ठा, सफलता–असफलता के काव्य–निबद्ध करके आत्मतृप्ति का अनुभव किया। इस काव्यधारा में उपलब्ध वैयक्तिकता इतनी 'आत्म केन्द्रित' है कि उसमें किसी अन्य को रस की अनुभूति नहीं होती।

4. **क्षणवादिता** – नया कवि 'क्षणवादी' जीवन दर्शन को अंगीकार करता है। मानव मूल्यों के विघटन, सामाजिक विषमताओं एवं युद्ध की विभीषिकाओं के कारण निराशा के स्वर नई कविता में व्याप्त है। नई कविता का यह निराशावाद एवं तद्जनित क्षणवाद कुछ तो व्यक्तिगत कारणों से है और कुछ सामाजिक कारणों से। उसका दृष्टिकोण इस दृश्यमान जगत के प्रति क्षणवादी है अतः वह हर क्षण को पूर्णतः भोगने का आकांक्षी है।

5. **भोगवाद एवं वासना** – नई कविता में भोग और वासना के स्वर विद्यमान है। आज का कवि प्रत्येक 'क्षण' को केन्द्रित स्तर पर भोगने के लिए उत्सुक है। सम्भवतः इसी कारण नई कविता में दूषित मनोवृत्तियों का चित्रण अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया है। कहीं–कहीं तो प्रतीकों के माध्यम से 'वासना' को अभिव्यक्ति दी गई है, 'अज्ञेय' ने 'सावन–मेघ' नामक कविता में 'प्रतीकों' के माध्यम से अपनी बात कही है :

वासना के पंक सी फैली हुई थी,
धारयित्री सत्य सी निर्ल्लज, नंगी औ' समर्पित। — **अज्ञेय**

6. **यथार्थवादिता** – नए कवि का दृष्टिकोण यथार्थवादी है। जीवन को उसके वास्तविक रूप में प्रस्तुत करना नए कवि का उद्देश्य रहा है। यही कारण है कि नई कविता की विषय–वस्तु प्रतीक, उपमान, भाषा आदि यथार्थ पर आधारित है। सीधे–सादे सरल शब्दों में सहज अभिव्यक्ति करते हुए इन कवियों ने अपने यथार्थवादी रूझान का ही परिचय दिया है।

"बन्द कमरे की गरमाई फिजा में गठरी सा गुड़मुड़ मैं
दुबका रजाई में सुन रहा खिड़की की संकरी दरारों से आती
नल पर झगड़ती औरतों की चखचख।।" — **शरद देवड़ा**

यथार्थ प्रतिस्पर्द्धा, भय, घृणा आदि की विद्रूपता 'जगदीश गुप्त' की निम्न पंक्तियों में देखी जा सकती है :

यन्त्र बाहु, यन्त्र–चरण, यन्त्र हृदय, यन्त्र बुद्धि
सब कुछ यन्त्रित, केवल इच्छाएं अनियन्त्रित।'' — **जगदीश गुप्त**

7. **आधुनिक युग बोध** — प्रयोगवादी कवियों ने आधुनिक मानव के जीवन में विद्यमान यातना, घुटन, सन्त्रास, कुण्ठा, द्वन्द्व और निराशा को अपने काव्य का विषय बनाया है। इस कविता में ब्रह्म की सत्ता के स्थान पर मानव की सत्ता की स्थापना हुई है। वर्तमान जीवन के कटु सत्य को ईमानदारी से व्यक्त किया गया है और परम्परागत मूल्यों की नवीन सन्दर्भो में जांच–परख की गई है। आधुनिक युग बोध के परिणामस्वरूप नई कविता में एक ओर तो जिजीविषा मुखरित हुई है, तो दूसरी ओर उसमें यथार्थवादिता एवं लघु मानव की प्रतिष्ठा भी हुई है। इसे अज्ञेय जी ने बड़े सटीक शब्दों में व्यक्त किया है :

''दुःख सबको मांजता है और
चाहे सबको मुक्ति देना वह न जाने किन्तु
जिनको मांजता है,
उन्हें यह सीख देता है कि सबको मुक्त रखें।।'' — **अज्ञेय**

8. **प्रणयानुभूति** — प्रयोगवादी कवि ने प्रणय भावना का निरूपण अकुण्ठ रूप में किया है। प्रेम को वे यौनाकर्षण ही मानते हैं, जो शरीर के स्तर पर जन्म लेता है। अज्ञेय की अनेक कविताओं में हमें प्रेम का यही स्वरूप दिखाई देता है। कवि ने मांसल प्रणयानुभूति को व्यक्त करने में कहीं भी संकोच का अनुभव नहीं किया। प्रेम को परिभाषित करते हुए वे कहते है :

क्या है प्रेम ? घनीभूत इच्छाओं की ज्वाला है।
क्या है विरह ? प्रेम की बुझती राख भरा प्याला है।। — **अज्ञेय**

'सावन मेघ' कविता में कवि ने प्रकृति के माध्यम से अपने हृदय की 'वासना' का उन्मुक्त चित्रण किया है। प्रकृति में काम भाव को देखकर कवि भी कामातुर होकर पुकार उठता है :

''आह, मेरा श्वास है उत्त्प्त
धमनियों में उमड़ आई है लहू की धार
प्यार है अभिशप्त

तुम कहां हो नारि ?'' **– अज्ञेय**

9. **लोक संस्कृति –** नया कवि लोक से जुड़ा हुआ है। लोक जीवन की अनुभूति, सौन्दर्य बोध, प्रकृति, बिम्ब और प्रतीक, शब्द और उपमान नई कविता में प्रचुरता से मिलते हैं। गिरिजा कुमार माथुर ने लोक जीवन का बिम्बात्मक प्रस्तुतीकरण निम्न पंक्तियों में किया है :

बीच पेड़ों की कटन में हैं पड़े दो–चार छप्पर
हाड़ियां, मचिया कठौते लट्ठ गूदड़ बैल बक्खर
राख, गोबर, चरी, आंगन लेजा, रस्सी, हल, कुल्हाड़ी।। **– गिरिजा कुमार माथुर**

कहीं–कहीं लोक गीतों की धुनों पर भी नई कविता की रचना की गई है, यथा :

''कांगड़े की छोरियां, कुछ भोरियां सब गोरियां।
लाला जी जेवर बनवा दो, खाली करो तिजोरियां।''

नई कविता ने शब्दों के प्रयोग की दृष्टि से 'लोक भाषा' के महत्व को पहचाना है।

10. **शिल्प विधान –** नए उपमान, नए प्रतीक और नए बिम्बों के प्रति इन कवियों का विशेष मोह जान पड़ता है।

1. बूंद टपकी एक नभ से
किसी ने झुक कर झरोखे से
कि जैसे हँस दिया हो। **– भवानी प्रसाद मिश्र**

2. यह जिन्दगी जैसे बम्बई मेल की तीव्र रफ्तार हो। **– वचनदेव कुमार**

प्रतीक योजना में ऐतिहासिक, धार्मिक, पौराणिक प्रतीकों के साथ–साथ यौन प्रतीकों का प्रयोग भी किया गया है। यथा :

घिर गया नभ उमड़ आए मेघ काले
भूमि को कम्पित उरोजों पर झुका–सा
विशद श्वासाहत चिरातुर
छा गया इन्द्र का नील वक्ष।'' **– अज्ञेय**

संक्षेप में कहा जा सकता है कि नई कविता हिन्दी काव्य के विकास का एक महत्वपूर्ण सोपान है। अति बौद्धिकता, छन्दहीनता, अश्लीलता, मुक्त यौन चित्रण को नई कविता का दोष ही कहा जाएगा। काव्य रूचि का इतना विकृत हो जाना कि वह यौन वासनाओं के नग्न चित्रण, कुण्ठाओं की अभिव्यक्ति, निराशा एवं अश्लीलता की भौंड़ी एवं अस्वस्थ दृश्यावली तक सीमित रह जावे, किसी भी साहित्य की उपलब्धि नहीं कही जा सकती। कुछ मिलकर नई कविता हिन्दी काव्य के विकास में इतना महत्वपूर्ण योगदान करती दिखाई पड़ रही है।

नई कविता के प्रमुख कवि एवं उनकी कृतियां

VPM CLASSES

[redacted]

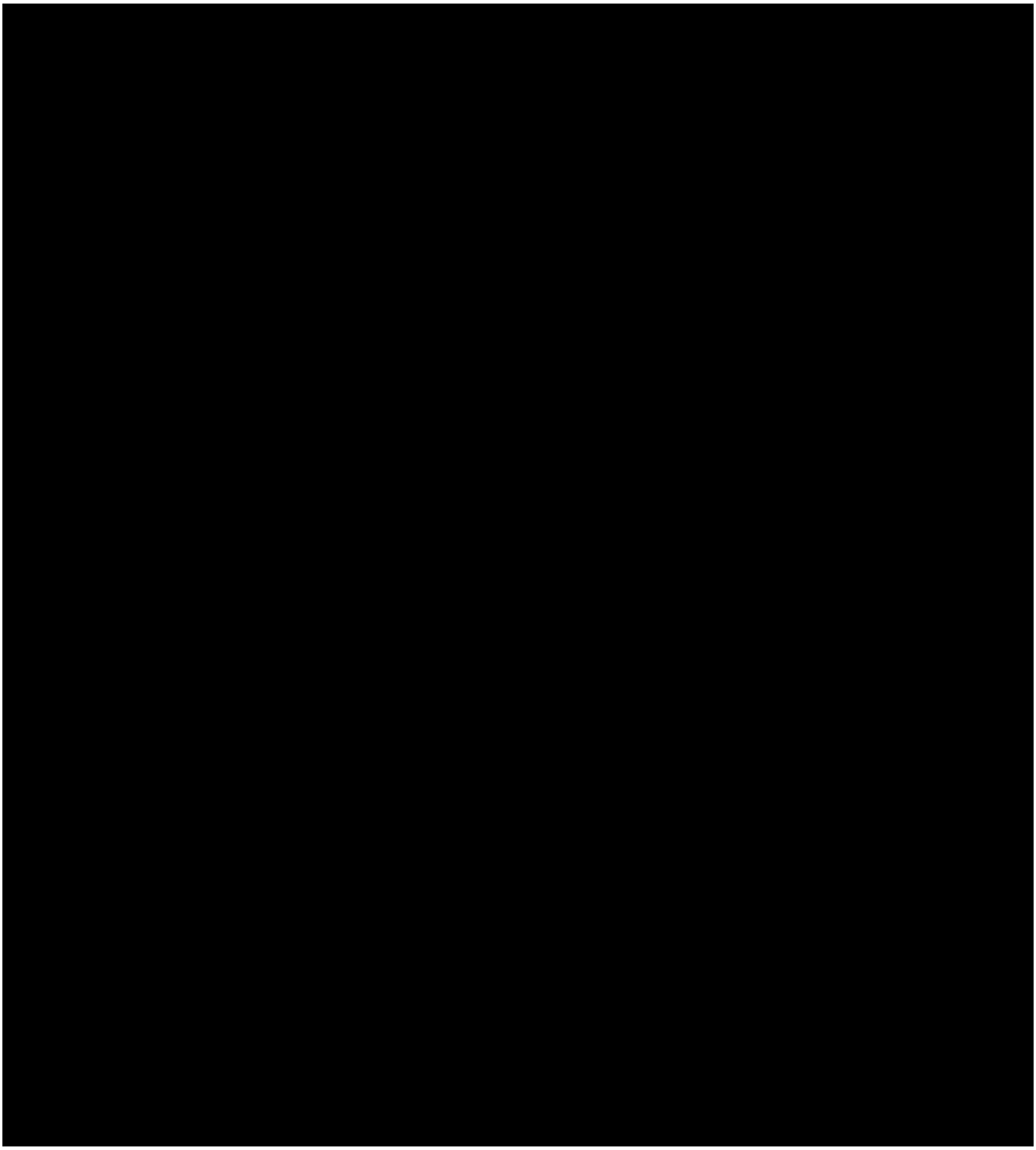

[redacted]

नयी कविता के अन्य कवि एवं उनकी प्रतिनिधि कृतियां

[redacted]

VPM CLASSES

क्रम	कवि का नाम	रचनाएँ
8	राजकमल चौधरी	मुक्ति प्रसंग
9	लक्ष्मीकान्त वर्मा	अतुकान्त, तीसरा पक्ष
10	कीर्ति चौधरी	कविताएं
11	रामदरश मिश्र	बैरंग बेनाम चिट्ठियां, पक गई है धूप
12	रणजीत	इतिहास का दर्द
13	धूमिल	संसद से सड़क तक
14	लीलाधर जंगूड़ी	नाटक जारी है
15	चन्द्रकान्त देवताले	दीवारों पर खून से
16	बालस्वरूप राही	जो नितान्त मेरी है
17	नरेन्द्र मोहन	इस हादसे में
18	विजेन्द्र	त्रास
19	ऋतुराज	अंगीरस
20	विष्णु चन्द्र शर्मा	आकाश विभाजित है

समकालीन हिन्दी कविता :

सन 1960 के बाद की कविता को अनेक नाम दिए गए जिनमें प्रमुख हैं – साठोत्तरी कविता, समकालीन कविता, अकविता, अभिनव कविता, युयुत्सावादी कविता, बीट कविता, अस्वीकृत कविता, अति कविता, सहज कविता, निर्दिशायामी कविता आदि। इन अनेक साइन बोर्डो का केवल एक ही अभिप्राय है कि साठोत्तरी कविता नई कविता से कुछ अलग और हटकर है। संक्षेप में साठोत्तरी कविता या समकालीन कविता की कुछ उल्लेखनीय विशेषताएं इस प्रकार है :

1. साठोत्तरी कविता में असन्तोष, अस्वीकृति और विद्रोह का स्वर बहुत साफ तौर पर उभरा है। यह स्वर कहीं व्यंग्य रूप में है तो कहीं खुले रूप में है।
2. जीवन की प्रामाणिक अनुभूतियों को जीवन परिवेश में अभिव्यक्त किया गया है।

3. समकालीन कविता रोमानी छायावादी संस्कारों से पूर्णतः मुक्त है।
4. समकालीन कविता समाज की मान्यताओं, परम्पराओं से मोहभंग व्यक्त करती हैं।
5. इस कविता में जीवन से सीधा साक्षात्कार है। उसमें जीवन की खीझ, असन्तोष, निराशा, कुंठा, कड़वाहट के स्वर अधिक है।
6. समकालीन कविता उन्हीं अनुभूतियों को अभिव्यक्ति देती है जो जीवन की निर्भय वास्तविकताओं से मन में उभरती है।

समकालीन कवियों में से कुछ प्रमुख कवि है – विश्वनाथ तिवारी, रघुवीर सहाय, श्रीकान्त वर्मा, दूधनाथ सिंह 'धूमिल', लीलाधर जगूंड़ी, वेणु गोपाल, मत्स्येन्द्र शुक्ल, विष्णु खरे, देवेन्द्र कुमार, श्याम विमल, विजय कुमार, परमानन्द श्रीवास्तव, आलोक धन्वा, अमरजीत, प्रताप सहगल, अरूण कमल, अनिल जोशी।

यहां कुछ प्रमुख कवियों के संकलनों के नाम दिए जा रहे है जो सन् 1975 के बाद प्रकाशित हुए है :

[redacted]

[redacted]

समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता :

कुछ प्रमुख पत्रिकाएं एवं उनके सम्पादकों के नाम इस प्रकार है :

[redacted]

साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में कुछ विशिष्ट नाम इस प्रकार है :

[redacted]

VPM